सामूहिक सुरक्षा की विफलता और अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था का संकट (1919–1939)
Failure of Collective Security and Crisis of International Order (1919–1939)

प्रथम विश्व युद्ध के बाद विश्व शांति बनाए रखने के उद्देश्य से राष्ट्र संघ की स्थापना की गई। इसका मूल आधार "सामूहिक सुरक्षा" था, जिसके अनुसार किसी एक राष्ट्र पर आक्रमण समस्त सदस्य राष्ट्रों पर आक्रमण माना जाएगा। किंतु व्यवहार में यह सिद्धांत सफल नहीं हो सका।
राष्ट्र संघ की संरचनात्मक कमजोरियाँ स्पष्ट थीं। अमेरिका इसका सदस्य नहीं बना। निर्णय सर्वसम्मति से होते थे, जिससे त्वरित कार्रवाई संभव नहीं थी। इसके पास सैन्य शक्ति का अभाव था।
1931 में जापान ने मंचूरिया पर आक्रमण किया। राष्ट्र संघ केवल निंदा तक सीमित रहा। 1935 में इटली ने इथियोपिया पर आक्रमण किया। प्रतिबंध प्रभावी नहीं रहे। 1936 में जर्मनी ने राइनलैंड का पुनर्सैन्यीकरण किया। फ्रांस और ब्रिटेन ने प्रत्यक्ष विरोध नहीं किया।
इतिहासलेखन में पारंपरिक दृष्टिकोण राष्ट्र संघ को अयोग्य संस्था मानता है, जबकि संशोधनवादी दृष्टिकोण यह तर्क देता है कि महान शक्तियों की राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी इसके पतन का कारण थी।
निष्कर्षतः सामूहिक सुरक्षा की असफलता ने आक्रामक राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया और द्वितीय विश्व युद्ध का मार्ग प्रशस्त किया।